साहाय्य के बिना स्वरूप-बोध नहीं हो सकता। सद्गुरु के सत्संग से अपने स्वरूप का दर्शन होता है, जिसे जानकर वह पूर्ण रूप से कृष्णभावना में परिनिष्ठित हो जाता है। कृष्णभावनाभावित पुरुष माया के गुणों के वश में नहीं रहता। सातवें अध्याय में कहा जा चुका है कि श्रीकृष्ण का शरणागत माया के कार्यों से मुक्त हो जाता है। तात्पर्य यह है कि तत्त्वज्ञ पुरुष के लिए माया का प्रभाव क्रमशः समाप्त हो जाता है।

गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान्।
जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते।।२०।।

गुणान्=गुणों से; **एतान्**=इन; **अतीत्य**=मुक्त होकर; **त्रीन्**=तीनों; **देही**=बद्धजीव; **देहसमुद्भवान्**=देह की उत्पत्ति के कारण; **जन्म**=जन्म; **मृत्यु**=मृत्यु; **जरा**=वृद्धावस्था के; **दुःखैः**=दुःखों से; **विमुक्तः**=मुक्त होकर; **अमृतम्**=अमृत का; **अश्नुते**=अनुभव करता है।

अनुवाद

देह की उत्पत्ति के कारणरूप तीनों गुणों का उल्लंघन करके जन्म, मृत्यु, वृद्धावस्था और सब दुःखों से मुक्त हुआ जीवात्मा इसी जीवन में अमृत को प्राप्त हे जाता है।।२०।।

तात्पर्य

इस श्लोक में वर्णन है कि पूर्ण कृष्णभावनाभावित जीव देह में स्थित होने पर भी तीनों गुणों से परे शुद्धसत्त्व में निष्ठ रहता है। **देही** शब्द का अर्थ बद्धजीव है। तत्त्वज्ञान के प्रताप से प्राकृत देह में रहते भी जीव त्रिगुणमयी माया के प्रभाव से मुक्त हो सकता है। यह निश्चित है कि इस देह को त्यागने पर वह भगवद्धाम में प्रविष्ट हो जायगा; इसलिए उसके लिए आत्मसुख वर्तमान देह में भी सुलभ है। भाव यह है कि कृष्णभावनामय भक्तियोग इस प्रापंचिक बन्धन से मुक्ति का लक्षण है। अट्ठारहवें अध्याय में इस तत्त्व का विशद वर्णन किया जायगा। मायिक गुणों के प्रभाव से मुक्त हो जाने पर ही जीव का भक्तियोग में प्रवेश होता है।

अर्जुन उवाच।
कैर्लिंगैस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो।
किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते।।२१।।

अर्जुनः उवाच=अर्जुन ने कहा; **कैः**=किन; **लिंगैः**=लक्षणों से युक्त; **त्रीन्**=तीनों; **गुणान्**=गुणों से; **एतान्**=इन; **अतीतः**=मुक्त पुरुष; **भवति**=होता है; **प्रभो**=हे नाथ; **किम्**=किस प्रकार के; **आचारः**=आचरण वाला होता है; **कथम्**=किस साधन के द्वारा; **च**=तथा; **एतान्**=इन; **त्रीन्**=तीनों; **गुणान्**=गुणों से; **अतिवर्तते**=मुक्त हुआ जाता है।